Aarti Sankat Hari Ki PDF

आरती संकट हारी की,
प्रेत प्रभु जन हितकारी की ।1।

रत्न माय सिंहासन राजै,
स्वर्णमयमुकुट शीशभ्राजे ।2।

गले मणि माल दिव्य साजै,
तेज लखि सूर्य चन्द्र लाजै ।3।

वस्त्र जगमग तनधारी की,
आरती संकट हारी की ।4।

हाथ में धनु कृपाण शरढाल,
संग में सेना बड़ी विशाल ।5।

देखकर भागे भूत कराल,
भक्त संकट हर अमितकृपाल ।6।

भूत पति जग अवतारी की,
आरती संकट हारी की ।7।

आन प्रकटे बालाजी धाम,
छा रहा भारत सबमें नाम ।8।

किये भक्तों के पूरण काम,
जयति जय प्रेत राज बलधाम ।9।

भक्त उरधाम बिहारी की,
आरती संकट हारी की ।10।

आरती जो करते मन से,
क्लेश सब छूटत हैं तन से ।11।

रहे परिपूरण तन जन से,
प्रेम हो प्रभु चरणन से ।12।

सुखद लीला विस्तारी की,
आरती संकट हारी की ।13।

आरती संकट हारी की,
प्रेत प्रभु जन हितकारी की ।14।